2021-22

RNI MAHMAR.43768/18/12/2013.TC Impact Factor 5.057 ISSN No. 2454-8731

MONTHLY PEER REVIEWED JOURNAL

Rankranti MultidisciplinaryResearch Journal

आधुनिक हिंदी काव्य चेतना के विविध आयाम

संपादक
डॉ. संतोष आडे

सहसंपादक
डॉ. सुभाष पवार, डॉ. सुभाष जाधव

Special Issue : Feb. 2022

Chaitanya Prakashan, Nanded -431606

अनुक्रमणिका

Sr .No	Title of Paper	Author Name	Page
1	नयी कविता के जन–चेतनावादी कवी नागार्जुन	डॉ. रविन्द्रनाथ माधव पाटील	07 - 12
2	कामायनी काव्य में चेतना पक्ष	डॉ शांति जी.	13 - 09
3	कवि जयप्रकाश कर्दम की कविताओं में दलित जीवन की समस्याएँ	डॉ.ज्ञानेश्वर गणपतराव रानभरे	21 - 28
4	डॉ.हरिकृश्ण देवसरे की बाल कहानियों में राष्ट्रीय चेतना	प्रा. डॉ. आनंद र. बक्षी.	29 - 34
5	प्रगतिवादी काव्य में सामाजिक चेतना के विविध आयाम	डॉ. दत्तात्रय येडले	35–38
6	छायावादी कवि निराला के काव्य में निहित सामाजिक, धार्मिक व साहित्यिक चेतना	प्रा डॉ कल्पना सतीश कवळे	39–42
7	**'समकालीन काव्य में चित्रित भूमंडलीकरण के विविध आयाम'**	लेप्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील	43–49
8	द्विवेदी युगीन काव्य में चेतना के विविध आयाम	डॉ0 ममता गंगवार	53–54
9	धुमिलजी के काव्य में आधुनिक बोध एक खोज.	निर्मला लक्ष्मण जाधव.	55–59
10	साठोत्तरी सशक्त हस्ताक्षर धुमिलजी के काव्य में आधुनिक चेतना.	प्रा.बाळासाहेब संभाजी कावळे.	60–64
11	सुशीला टाकभौरे के काव्य में सामाजिक चेतना	डॉ. सविता कृष्णात पाटील	65– 68
12	छायावादी काव्य में व्यष्टिबोध की चेतना	विशाखा मधुकर रगडे	69–72
13	नागार्जुन के काव्य में अभिव्यक्त युगीन चेतना	अरूण गौतम सपकाळ	73–75
14	**"आधुनिक हिंदी कवयित्री ममता कालिया के काव्य में नारी चेतना के विविध आयाम"**	अजित दादू फाळके	76–81
15	छायावादी हिन्दी काव्य : चेतना के विविध आयाम	डॉ0 गीता अस्थाना	82–91
16	छायावादी काव्य में चेतना की अभिव्यक्ति	डॉ. नंदादेवी पंडितराव बोरसे	92-97

'समकालीन काव्य में चित्रित भूमंडलीकरण के विविध आयाम'

लैफ्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील,
राजर्षि छत्रपति शाहू कॉलेज, कोल्हापुर,
मेल :rcpatilshahu@gmail.com
मो.: ९५५२५६४२४८/९३०७१४४०६५

अमरिका और सोवियत युनियन के बीच चले शीत युद्ध की समाप्ति के बाद पूरी दूनिया को एक ही बाजार बनाने की प्रक्रिया चली। अमरिका के नेतृत्व में पूँजीपति राष्ट्रों की मंडल बनी। आगे चलकर इसी मंडल ने दुनिया का नेतृत्व किया। अत: स्पष्ट है कि पूरी दूनिया को बाजार बना देने प्रक्रिया को आगे जाकर वैश्वीकरण या भूमंडलीकरण कहा गया। भूमंडलीकरण के आर्थिक, सांस्कृतिक और मीडिया ये तीन प्रमुख पहलू बने।

२१ वी सदी में विज्ञान और तकनीकी विकास ने आज दुनिया को 'ग्लोबल व्हीलेज' बना दिया है। विश्व की किसी भी जगह की घटना पूरी दुनिया पर प्रभाव छोड देती है। वैश्वीकरण के संदर्भ में डॉ. इंद्रा जैन लिखती है, "वैश्वीकरण का अर्थ विश्वस्तर पर सभी देशों के परस्पर आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय सहयोग का विकास करना है। लेकिन उसका आज जो स्वरूप उभरकर सामने आ रहा है उसका सीधे-सीधे अर्थ है पूँजीवादी देशोंव्दारा कम विकसित देशों में बाजारवाद को जन्म देना और अपनी अर्थव्यवस्था को मजबुत करना।"[१]

भारत में वीसवीं सदी के अंतिम दशक में भूमंडलीकरण एवं उदरीकरण का उदय हुआ। परिणामस्वरूप 'मुक्त बाजार' के व्दार हमेशा के लिए खुल गए। भारत की पूँजी भी अन्य देशों के समान 'ग्लोबल पूँजी' बन गयी। इसके संदर्भ में कमल नयन काबरा लिखते है, "वास्तव में भूमंडलीकरण मंशा सारी दुनिया को एक मंडी में तब्दील कर देना है, एक ऐसी दुनिया जो मंडी मात्र ही नहीं है, अपितु उसका संचालन भी मंडी की आंतरिक ताकतो व्दारा

सामाजिक, विश्वीय जीवन के हर अन्य पक्ष को गौण और मंडी का पिछलगू बनाकर किया जाता है।"[२] भूमंडलीकरण के परिणाम के चलते २१ वीं सदी के पहले दशक में भारत कुछ क्षेत्रों में शिखर पर पहुँच गया,वहीं दूसरी ओर कुछ क्षेत्रों में शिखर से सबसे निचले पायदान पर पहुँच गया।

एक ओर भारतीय परिवार का विघटन हो रहा है। वहीं दूसरी ओर भूमंडलीकरण के कारण संयुक्त परिवार की जगह एकल परिवार की संख्या बढ़ती जा रही है। हर कोई अपने आपको सबसे अलग दिखाना चाहते हैं। इसी के चक्कर में बेहताशा दौड रहे हैं। आज चारो ओर चक्काचौंध बाजार का बोलबाला है। बाजार में सबकुछ आसानी से उपलब्ध है। जाने - माने समकालीन कवि एकांत श्रीवास्तव की 'बाजार' कविता में भूमंडलीकरण के प्रभाव का चित्रण इस प्रकार हुआ है।

"यहाँ थोडे से लोग विक्रेता हैं बाकी सब क्रेता
बाकी सब में बहुत से लोग क्रेता भी नहीं है
जो क्रेता नहीं यांनी जिनकी जेबें खाली है'
वे बाजार के वृत से बाहर हैं
चढ गई हैं कीमते चिजो के आकाश में
गिर गया है आदमी का बाजार भाव।"[३]

अर्थात आज पूँजीवादी समाजव्यवस्था में पैसा ही सब कुछ बन गया है। जिनका जेब खाली है उनको कोई पुछता नहीं। आज की इस परिस्थिति को कौन जिम्मेदार है ऐसा सवाल कवि करते हैं।

वैश्वीकरण का सीधा प्रभाव सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों पर हुआ। इन्हीं बातों को कवियों ने माध्यम बनाया और वास्तविकता का चित्रण किया। वर्तमान परिवेश में व्यक्ति को बाजार की शक्तियाँझुकने के लिए मजबुर कर रही है। आज हर बच्चे से लेकर बुजुर्गो तक हर किसी को उपभोक्ता की नजर से देखा जाता है। कवि

इन बातों का खंडन करता है और भारतीय अहिंसावादी भारतीय गांधीवादी विचारों का समर्थन करते हुए लिखता है,

"वे बनाऐंगे सामान

हम नहीं खरीदेंगे

वे तय करेंगे सदी का रस्ता

हम नहीं चलेंगे

मोहक विज्ञापनों का असर नहीं होगा हम पर

एक मुट्ठी अन्न रोज कम खायेंगे

और बचाऐंगे बीज

दुनिया में

विरोध के सारे हथियार जब चुक जाऐंगे

फिर भी बचा रहेगा हमारा असहयोग

हमारी आत्म निर्भरता"।[४]

वैश्वीकरण के चलते हर कोई अलग अलग चीजों का पेंटेट बनाकर रजिस्टर करके रख रहा है। इसमें बहुराष्ट्रीय कंपनियों की बहुत बडी साजिश है। जाने माने कवि 'संजय कुंदन' अपनी कविता 'बासमती चावल' में ऐसे ही एक प्रसंग का वर्णन करते हुए लिखते हैं

"विजेता आएंगे और

हमें जीतकर जाएंगे

तब तुम अपने खेत की

एक मुट मुट्ठी दे सकोगे हमें

वे हमे ले जाऐंगे

अनजान मंडियों में

फिर बिकने आऐंगे तुम्हारे ही घर

गले में एक विचित्र नाम का पट्टा डाले

तब कैसा लगेगा तुम्हें"।'

सिनेमा, संचार माध्यमो, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद आदि सभी का घातक प्रहार मानव मूल्यों एवं प्राचीनतम् संस्कृति पर भी हो रहा है। वैश्वीकरण के चलते समाज गलत राह पर निकल पडा है। परिणामत: समाज में मूल्यहीनता बढती जा रही है। स्वप्निल श्रीवास्तव के 'बुरे आदमी अच्छे आदमी' कविता मे इस प्रसंग का चित्र दृष्य क्या है,

"अच्छे लोगों के पास जो मूल्य हैं

उनकी जिंदगी में कोई किमत नहीं

वे बाजार में मुफ्त बिक जाते हैं

बाजार में बुरी चीजें ऊँचे दामों में निकली है

उन्हें बेचकर लोग हो रहे है अमीर

राजनिती हो या समाज बुरे लोग

रवी हो चूके हैं।"[६]

विज्ञापन वैश्वीकरण से निर्मित सबसे प्रभावी साधन है। इसका बाजार व्यवस्था से बहुत गहरा संबंध है। इसे हम रोज फिल्म, टी.वी. रेडिओ, समाचार पत्र संगीत मैफिल आदि विविध माध्यमों से देखते हैं। आज हम सब टी. वी और मीडिया के गुलाम हो गए है। टी. वी में दिखाई जानेवाले विज्ञापन पूँजीपतियों या बहुराष्ट्रीय कंपनियोंव्दारा निर्मित होते हैं। परिणामत: हमे उन वस्तुओं के उपभोक्ता बनने के लिए विवश होना पडता है। बाजार ने इसके लिए सुंदर स्त्रीयों को माध्यम बनाया।हर चीज बेचने के लिए नारी के देह का उपयोग किया जा रहा है। हम इसकी घृणा जरूर करते हैं परंतु टी. वी के अधीन हो चूँके हैं। बच्चों से लेकर बुढो तक सभी टी. वी. के दिवाने हैं। इन्हीं बातों पर प्रकाश डालते हुए कवि लिखते हैं,

"अप्सराएँ आ रही हैं जा रही हैं

जिस्म पर कपडे का एक बारीक-सा इल्जाम लेकर

रैम्प पर जारी है इनका कैट वाक

टेलीविजन पर निगाहों को मार्ये

मेरा दो साल का वेटा

अपने हाथों में लिए वैठा है रिमोट

और में नजरे झुकाएँ.....

हवस के भूत वंगले से

वदन के चाँद की खुशवू

मुसलसल आ रही है।"[७]

उपरोक्त पंक्तियों से पता चलता है कि हम वाजार का शिकार बनते जा रहे हैं। घर के बच्चे भी इसका शिकार हो रहे हैं।

मल्टी नॅशनल (वहुराष्ट्रीय) कंपनियों ने पानी को भी अपने व्यापार का साधन बना लिया है। दुनिया के पानी को खरीदकर लोगों की प्यास पर एकाधिकार स्थापित किया है। आज लोग सार्वजनिक जल-संस्था को अतीत की वात मान रहें है। हर कोई बोतल बंद पानी पीने में विवश है। राष्ट्रीय आंतरराष्ट्रीय स्तर पर हो रहे कुटिल व्यापार का प्रभाव हिंदी कविता में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है,

"पानी को बेचने से पहले

मछलियों से पूछा जाना चाहिए था

और नहीं तो

पूछ लेना चाहिए था, पानी से ही

पानी को बेचने से पहले,

पूछा गया देश-विदेश के पूँजीपतियों से,

विचौलियों से व्यापारियों से उद्योगपतियों से

पानी को भी पता नहीं चला

अपना बिकना

अपना बेचा जाना

अपना गुलाम होना

पानी का पता पूछ रही थी मछली एक

ताल-तलैया

पोखर नदियाँ

सागर धरती

सबके चेहरे पर थी उदासी

सबके जीवन में था सूखा।

पता लेकर पहुँची भी,

पानी बोतल में बंद था

मछली का तड़पना

मनुष्यों के तडपने जैसा था।"[८]

अत:निष्कर्षत: कह सकते है कि भूमंडलीकरण ने एक गलत किस्म की व्यवस्था को जन्म दिया है। इसका सीधा परिणाम सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं पर हुआ है। उदरीकरण और वैश्वीकरण ने व्यक्तिवाद को बढावा दिया है। भूमंडलीकरण के चलते सारी दुनिया 'ग्लोबल व्हीलेज' बन गयी है।अमरिका और विकसित देशों का यह नया साम्राज्यवाद है।

संदर्भ संकेत :

१) सं. नवीन नंदवाना, समकालीन कविता विविध विमर्श, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम सं, २०१४, पृ. २१३.

२) हंस, पत्रिका अगस्त, २००३, पृ. ३०.

३) एकांत श्रीवास्तव, बीज के फूल तक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला सं, २००३,

पृष्ठ ३८.

४) राकेश रेणू, कथा देश, जनवरी, २००१, पृष्ठ, १३.

५) अभय कुमार, वाक-४, पृष्ठ, १७९

६) स्वप्निल श्रीवास्तव, बुरेआदमी अच्छे आदमी, वर्तमान साहित्य, अक्तुबर.

७) नौमान शौक, फैशन शौ, वागार्थ, दिसंबर, २००३.

८) कमलेश्वर साहू, पानी को बेचने से पहले, हंस, दिसंबर, २००७.